RAJBIL26868/2016/1284525

वर्ष 2 अंक 4 मूल्य 20

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

जयवर्द्धन

राजसमंद के प्रबुद्ध पाठक वर्ग की लोकप्रिय पत्रिका

हिन्दी मासिक पत्रिका | चुनाव विशेषांक | अप्रैल 2021

पेज संख्या : 16 राजसमंद

प्रसार संख्या 2000

प्रकाशन तिथि : माह की 1 से 15 तारीख

किरणजी के प्रति जनता के अपार स्नेह की वजह से लिया क्षेत्र के विकास का संकल्प : दीप्ति

जयवर्द्धन NEWS

Exclusive Interview

भाजपा के विकास और कांग्रेस के वादों के बीच होगा मुकाबला

जयवर्द्धन NEWS

राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए

YouTube Channel Jaivardhan News

सम्पादकीय

शतरंज की बिसात के मोहरे

राजसमंद विधानसभा परिक्षेत्र में विधायक पद के उप चुनाव प्रत्याशियों को अपनी कार्य क्षमता दिखाने के लिए लगभग दो वर्षों का प्रोबेशन पीरियड कहा जा सकता है। इसे प्रत्याशियों द्वारा अपने चुनाव क्षेत्र के मतदाताओं की मंशा को समझ लेने की क्षमता का परीक्षण पर्व कहा जा सकता है, तो दूसरी ओर यह मतदाताओं की इच्छा, अपेक्षाओं के पूर्ण होने, न होने की दृष्टि से एक प्रकार से मतदाता के भाग्य का भी परीक्षण है। यानि इस उप चुनाव के माहौल और परिणाम को प्रत्याशी व मतदाता को अपनी ताकत की कसौटी स्वरूप लेना चाहिए।

समझने की यह भी जरूरत है कि कहीं मतदाता का चुनाव को लेकर मोहभंग तो नहीं हो रहा है। कहीं राजनीतिक दलों के चुनाव चिह्न और उनका पृष्ठबल अब मतदाता की अरुचि के कारण तो नहीं बन रहे हैं? राजनीतिक छल छद्म, स्पर्द्धा के वर्तमान स्वरूप को लेकर गुस्सा, हताशा, वितृष्णा लोकतंत्रीय शुचिता को तो नहीं प्रभावित कर रही है?

ऐसा होने की वजह हो सकती है। चुनाव क्षेत्र को शतरंज की बिसात बनाकर मोहरों और चेहरों को सामने लाकर पेराशूट, बाहरी और स्थापितों द्वारा प्रभाव को जबरन स्थापित करना जनता जनार्दन में अविश्वास की वजह बन रहा हो।

जनता के मूड को देखें तो वहां भी प्रत्याशियों को लेकर भावुकता का प्रवाह देखने में आ रहा है। नए चेहरे पर पुरानी छवि और उपलब्धियों का आवरण उम्मीदवार के लिए अपने पक्ष में माहौल बनाने को काफी है। दूसरी ओर स्वयं की अराजनीतिक छवि और सामाजिक क्षेत्र में कार्य करने का दावा भी असर डाल रहा है। विकास के दावों के बीच वैकल्पिक शक्ति के रूप में किसान और मजदूर वर्ग की आवाज बन नया चेहरा भी समीकरणों को प्रभावित करने और जनाधार खोजने की कोशिश में है। पारिवारिक पृष्ठभूमि से जमीन मजबूत करने की कोशिश हो, सामाजिक पृष्ठभूमि से जनाधार बनाने या राजसमंद को अपने राजनीतिक भविष्य के लिए सर्वेक्षण करने का प्रयास हो, राजसमंद सभी प्रत्याशियों के लिए मानों राजनीति की प्रयोगशाला बन गया है। इन सबके बीच राजनीति के पंडितों या द्रौणाचार्यों के लिए जैसा कि लगता है, यह विधानसभा क्षेत्र शह और मात का मैदान बन गया है।

इस बीच विकास का विजन और मिशन तो जनता जानती है। उसी से उठाकर मुद्दे प्रत्याशियों ने फिलहाल अपनी पोटली में बांध लिए हैं। जब मिली फुरसत तो भई देखा जाएगा, दुनियां के बारे में सोचा जायेगा।

एक ओर प्रत्याशियों की आवाज़ गांव-गांव, गली गली गूंज रही है। दूसरी ओर जन शक्ति समर्थन में नारे लगाकर भी जैसे चुप है। हमें तो चाणक्य याद आ रहे हैं। कीमत दोनों की ही चुकानी होती है, बोलने की भी, चुप रहने की भी।

अतिथि सम्पादक

डॉ. राकेश तैलंग
शिक्षाविद् व साहित्यकार
कांकरोली, राजसमंद

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय
जयवर्द्धन
राजसमंद के प्रबुद्ध पाठक वर्ग की लोकप्रिय पत्रिका

सम्पादक एवं प्रकाशक : ललिता राठौड़
निदेशक व उप सम्पादक : विजय शर्मा, लक्ष्मणसिंह राठौड़
सह सम्पादक : हितेन्द्रसिंह चौहान
विज्ञापन प्रबंधक : जितेन्द्र शर्मा
वितरण विभाग : नारायण पालीवाल, सुधीर दवे
कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट
कांकरोली, जिला राजसमंद मो. 94142-39648, 96729-18138

सम्पादक, प्रकाशन एवं स्वामी ललिता राठौड़ द्वारा राजसमंद से प्रकाशित एवं रमेशचंद्र आचार्य द्वारा आचार्य प्रिंटर्स, हस्तिनापुर कांकरोली, जिला राजसमंद (राजस्थान) से मुद्रित
नोट : पुस्तक में प्रकाशित सामग्री में यथासंभव सावधानी बरती गई है। फिर भी त्रुटियों के ध्यानाकर्षण के लिए धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित आलेख में लेखकों के अपने निजी विचार है। किसी भी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र राजसमंद होगा।

जयवर्द्धन पत्रिका
की वार्षिक सदस्यता
सिर्फ 200 रुपए में
सम्पर्क करें :
9414239648

ताजा खबरों से
अपडेट रहने के लिए
SUBSCRIBE करें
YouTube
Jaivardhan News

Web. : www.jaivardhannews.com
E-mail : jaivardhanpatrika@gmail.com

किरणजी के प्रति जनता के अपार स्नेह की वजह से लिया क्षेत्र के विकास का संकल्प

जयवर्द्धन विशेष साक्षात्कार में दीप्ति माहेश्वरी ने कहा

राजसमंद की जनता के कुछ तीखे व रोचक सवालों पर जयवर्द्धन के जरिये भाजपा प्रत्याशी **दीप्ति किरण माहेश्वरी** ने दिए खुलकर जवाब। इसी पर हमारे उप सम्पादक विजय शर्मा का

Exclusive Interview

सवाल : राजनीति में आने का आपका मानस बचपन से था या अभी किरणजी के निधन के बाद निर्णय लिया ?

जवाब : नहीं, मेरा राजनीति में आने का कोई मानस नहीं था। किरण जी के निधन के बाद राजसमंद में स्थानीय कार्यकर्ताओं द्वारा निकाली गई अस्थि कलश यात्रा के दौरान आमजन के द्वारा किरणजी के प्रति अपार संवेदनाओं के साथ बार बार हमें आग्रह किया गया। साथ ही दो- तीन बार सैकड़ों कार्यकर्ता हमारे घर आए और कहा कि जिस तरह किरणजी हमारे साथ खड़े रहे थे, उसी प्रकार आपका भी जुड़ाव बना रहे। इसीलिए आप भी टिकट के लिए दावेदारी करो और राजसमंद सीट से चुनाव लड़ो। प्रभु द्वारकाधीश की कृपा और राजसमंद की जनता के अपार जनसमर्थन का ही परिणाम है कि मैं आज राजसमंद में आप सब के साथ खड़ी हूं।

सवाल : किरणजी की बड़ी उपलब्धियां आप किसे मानते हैं ?

जवाब : उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि यही है कि उनका कार्यकाल दो दशक का रहा। उन्होंने निरन्तर जनसेवा का कार्य किया है और हम शहर से लेकर गांव- ढाणी तक जहां भी जाते हैं, तो वहां के लोग कहते हैं कि किरणजी ने तो हमारा फोन एक बार में उठा लिया और अस्पताल में हमारी मदद की, तो कोई कहते कि हमारा बिल कम करवाया। इस तरह वे प्रत्येक परिवार की मुसीबत में सदैव खड़ी रहती थी और घर घर से उनका जुड़ाव है, यहीं उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि है। किरणजी हमारे लिए एक बड़ा परिवार छोड़कर गए हैं, जो सदैव हमारे सुख-दु:ख में खड़े हैं और हम भी उनके हर सुख- दु:ख में खड़े हैं।

सवाल : आप राजनीति में अपना आदर्श किसे मानती हैं ?

जवाब : मेरी आदर्श मेरी मां किरणजी ही रही है। राजनीति हो या चाहे मेरी पर्सनल लाइफ हो। बचपन से ही वे मेरी आदर्श है। वो हर किरदार में सफल रही, चाहे वह एक माता के रूप में, चाहे एक बहू के रूप, चाहे एक पत्नी के रूप और चाहे एक राजनीतिज्ञ के रूप में हो। एक राजनीतिज्ञ के रूप में रूप में उन्होंने राजनीति में काफी कार्य किया है। हमारे परिवार में उनके जाने से एक वेक्यूम क्रिएट हुआ है।

सवाल : किरण जी माहेश्वरी के राजनीतिक जीवन और उनकी कार्यशैली से आपको क्या प्रेरणा मिलती है ?

जवाब : वे कोई भी काम कल के लिए नहीं छोड़ती थीं। अगर किसी ने काम दिया या बताया है, तो वह आज ही होना चाहिए और अभी होना चाहिए। कितनी बार हम लोगों की ऐसी बात हो जाती थी कि मम्मी ये काम तो कल कर लेंगे, लेकिन वे बोलते नहीं, आज का काम आज ही होना चाहिए। वे अपने कार्य के प्रति दृढ़ निश्चयी थी। यहीं, नहीं किसी के द्वारा कोई कार्य बताया जाता, तो वापस उस कार्य का फीडबैक लेना भी कभी नहीं भूलते और पूछते थे कि वह काम हुआ या नहीं हुआ। यहां तक कि हम कभी घर का भी कोई काम उन्हें बताते, तो वे राजनीतिक व्यस्तता के बावजूद वे फोन कर बता देती थी कि वह काम मैंने कर दिया।

सवाल : कांग्रेस पर हमेशा यह इल्जाम लगता रहा है कि कांग्रेस वंशवाद को बढ़ावा देती है। दिवंगत किरणजी माहेश्वरी भी काफी बार इसके खिलाफ आवाज उठाती रही है। आपके राजनीति में उतरने के बाद ये चर्चाएं आम हो गई, इस पर आप क्या कहना चाहेंगी ?

जवाब : किरणजी जब तक जीवित थें, तब तक उन्होंने कभी भी अपने पद का फायदा उठाकर परिवार के किसी भी सदस्य को राजनीति में नहीं लाए कि ये मेरी बेटी, ये मेरे पति, मेरा बेटा है, जिन्हें आप पार्टी में दायित्व दीजिए। जबकि वो उस पॉजीशन में थे, जो वे आसानी से कर सकते थे। वो सदैव वंशवाद के खिलाफ थी। वंशवाद तब होता है, जब नेता अपनी पॉजीशन का फायदा उठाकर अपने परिवार को बढ़ावा देते हैं। जिस प्रकार कांग्रेस में पूरी पार्टी ही एक ही परिवार के इर्द-गिर्द चलती है। यहां पर किरणजी के जाने के बाद जनता की भावना है कि हमारा परिवार उनके साथ जुड़ा रहे। जिस प्रकार किरणजी ने विकास के कार्य किए हैं, उसी प्रकार जनता को विश्वास है कि उनका कार्य आगे बढ़ता रहें। जनता के बार बार आग्रह के कारण आज मैं राजनीति में हूं।

सवाल : एक जनप्रतिनिधि बाहरी है या स्थानीय है। इस बात का क्षेत्र के विकास और राजनीति में कितना प्रभाव पड़ता है। आपकी नजर में इसके क्या मायने हैं ?

जवाब : इंसान क्षेत्र के प्रति अपने व्यक्तिगत जुड़ाव से स्थानीय होता है। किरणजी हर घर घर से जुड़े हुए थे, क्षेत्र में ऐसा कोई गांव नहीं है, जिससे वे स्वयं नहीं जुड़े हुए थे। तो सबसे ज्यादा स्थानीय तो वो ही थे। राजनीति में ऐसे कितने ही जनें यहां रहते हुए भी, लोगों को नहीं पहचानते और यहां तक पड़ोसी को भी नहीं जानते हैं। मैं कहना चाहती हूं कि स्थानीय इंसान अपने कार्य क्षेत्र से होता है। प्रमुख बात यह है कि किस प्रकार वे लोगों के सुख- दु:ख में खड़ा रहता है। ऐसे कितने ही परिवार है कि जो कहते हैं कि हमने किरणजी को कॉल कर दिया, तो अब हम निश्चिंत हो सकते हैं। जब हर परिवार से आपका जुड़ाव हो जाता है, तब स्थानीय का तो प्रश्न ही नहीं रहता है और हम तो वसुधैव कुटुम्बकम को आदर्श मानने वाली विचाराधारा से आते हैं।

सवाल : गहलोत सरकार द्वारा वर्तमान में राजसमंद के विकास को लेकर कई बड़ी घोषणाएं की गई है। आपको क्या लगता है, इन घोषणाओं का फायदा राजसमंद की जनता को मिलेगा ?

जवाब : सबसे पहले तो मैं कहना चाहूंगी कि आज कांग्रेस सरकार को ढाई साल हो गए हैं राजस्थान में। जब कोई सरकार बनती है, तो कि उनका पहला कर्तव्य यह होता है कि वे विकास करें और लोगों के कार्य करें तथा गांव- ढाणी में बिजली, पानी जैसी मूलभुत सुविधाएं उपलब्ध करवाए। आप अगर सरकार में हैं, तो आपको करवाने ही चाहिए, लेकिन कांग्रेस ने ढाई साल में कोई कार्य नहीं किया। कृषि ऋण 10 दिन में माफ करने का वादा कर सत्ता में आए, मगर आज तक कुछ नहीं हुआ। अन्नपूर्णा योजना जो वसुंधराजी के कार्यकाल में चल रही थी, उसका नाम बदलकर इन्दिरा रसोई कर दिया और कोरोनाकाल में उसकी सख्त जरूरत थी, तब एक साल तक

उस रसोई को बंद ही कर दी गई। ऐसे कई कार्य हैं, जो गहलोत सरकार ने बंद कर दिए। अब चूंकि राजसमंद विधानसभा उप चुनाव है, तो अचानक कांग्रेस को याद आया कि वहां बड़ी बड़ी घोषणाएं करनी चाहिए। और घोषणा भी किस पैसे की, डीएमएफटी। जो यहां की जनता का हक है। डीएमफटी के 500 करोड़ तो वे राज्य सरकार के पास ले जा चुके हैं, जो राजसमंद का पैसा है और उसे भी इधर उधर कर दिया। डीएमएफटी के उसी बजट से अब ये घोषणाएं कर रहे हैं, तो मैं पूछना चाहती हूं कि ढाई साल तक क्या किया। राजसमंद की जनता के लिए अब तक क्या किया। यहां की कोरोना जांच लेब भी नाथद्वारा ले गए, जो पूरे राजस्थान में हर जिला मुख्यालय पर है। राजसमंद के जिला चिकिसालय के डॉक्टर हटाकर नाथद्वारा ले जाने वाले इन चुनावों में फिर डॉक्टर लाकर क्या संदेश दे रहे हैं? चुनावों में सक्रिय होकर घोषणाएं करना कांग्रेस की आदत है और भाजपा की आदत है कि सदैव क्षेत्र का विकास करें। तो इन घोषणाओं का कोई मतलब नहीं है।

सवाल : अगर किसी कारण से जनता का पूर्ण आशिर्वाद आपको नहीं मिल पाता है, क्या तब भी आप राजसमंद में जनसेवा या राजनीति में सदैव सक्रिय रहेंगी?

जवाब : जैसा कि मैंने आपको कहा कि किरणजी के लिए राजसमंद एक राजनीतिक कार्यक्षेत्र नहीं था, बल्कि उनका एक बड़ा परिवार था। जो वो हमारे लिए छोड़कर गई। उस परिवार के साथ रहना और उस परिवार के हर सुख- दु:ख में खड़े रहना मैं जीवनभर अवश्य निभाऊंगी।

सवाल : जैसा कि अभी आपने बताया कि डीएमएफटी का फंड राज्य सरकार ने खींच लिया। यह चिंता किरणजी ने भी जताई थी कि कांग्रेस सरकार आने के बाद काफी कार्य इस कारण रूक गए। सरकार ने भाजपा विधायक के क्षेत्र में विकास को लेकर भेदभाव रखा। अब अगर आप भी विधायक बनती है, तो ऐसी स्थितियों से कैसे उबर पाएंगी?

जवाब : अभी सांसद दीयाजी भी भाजपा से है। जिला प्रमुख के साथ कई प्रधान भी भाजपा से है, तो हम समन्वय बिठाकर निश्चित रूप से सभी विकास कार्य करवाएंगे। जनहित के कार्य हर परिस्थिति में पूरे करवाने के प्रयास करेंगे। भाजपा की जीत निश्चित है और भाजपा के सभी जनप्रतिनिधि एकजुट होकर विकास कार्य करवाएंगे। क्षेत्र में भाजपा का नेतृत्व बहुत मजबूत है। केन्द्र में भी हमारी सरकार है और फिर गहलोत सरकार कब तक चल पाएगी, इसमें भी बहुत संशय है।

सवाल : राजसमंद में विकास की क्या क्या आपको संभावनाएं दिखाई देती है। अगर आप जीत जाते हैं, तो राजसमंद विधानसभा क्षेत्र में क्या- क्या करना चाहेंगी?

जवाब : जहां तक राजसमंद के विकास के विज़न की बात है तो मैं आपको स्पष्ट करना चाहूंगी कि किसी भी क्षेत्र के विकास के लिए किसी एक व्यक्ति की अपनी सोच को लागु करने की बजाय क्षेत्र की जनता, स्वयंसेवी संगठनों से विचार विमर्श कर प्राथमिकताएं तय करनी चाहिए। मेरा स्पष्ट मत है कि मैं क्या सोचती हूं इससे कई गुना अधिक महत्त्व इस बात का है कि जनता क्या चाहती है? यहां के समाज, संगठन, व्यवसायी, किसान, मजदूर, हमारे कार्यकर्ता क्या चाहते है? राजसमन्द का विकास केवल दीप्ति माहेश्वरी की सोच और दृष्टिकोण से ही नहीं होगा। हम किरणजी के आदर्शो पर चलते हुए निरंतर संवाद बनाए रखकर आमजन के बीच जाएंगे। उनसे सलाह मशविरा करेंगे। क्षेत्र के विकास की कार्ययोजना बनाएंगे और आमजन की आवाज को सरकार तक पहुंचाकर क्षेत्र के विकास हेतु हर संभव प्रयास करने का दायित्व मेरा है।

राजसमंद की प्राथमिकताओं की जहां तक बात है, तो मैं कोई सपने दिखाकर वोट नहीं मांगना चाहती हूं। किरणजी के जाते ही मेरे लिए यह निर्णय बहुत कठिन था, लेकिन यह विधाता की मर्जी, मां का आशीर्वाद और जनता का प्यार ही है कि मैं अब चुनाव लड़ रही हूं। मेरा सदैव प्रयास रहेगा कि

जिस विकास पर राजसमन्द का हक़ है, वो उसे मिलकर रहे। उसके लिए जिससे लड़ना होगा लडूंगी। फिर भी यदि आप मुद्दे ही जानना चाहते हैं तो मैं बताना चाहूंगी कि राजसमन्द झील के सदैव लबालब रहने, झील सौन्दर्यीकरण के सभी कार्य जो वर्तमान सरकार द्वारा रोक दिए गए हैं, उन्हें पुन: चालू करवाना प्राथमिकता रहेगी। प्राकृतिक व ऐतिहासिक संसाधनों को नुकसान पहुंचाए बगैर एलिवेटेड या रिंग रोड, क्षेत्र में पर्यटन को बढ़ावा देकर स्थानीय युवाओं को रोजगार उपलब्ध करवाना, टोल के लिए पूर्व में की गई पास व्यवस्था के लिए हरसंभव संघर्ष करना, गांवों में पेयजल, सड़क, रीको का नया औद्योगिक क्षेत्र विकसित करना, भीलवाडा से गैस पाइप लाइन से राजसमंद को जोड़ना व अन्य मूलभुत आवश्यकताओं को प्राथमिकता से पूर्ण किया जाएगा। राजसमंद में ब्रॉडगेज, जो मेरी मम्मी का अधूरा सपना है, जिसे हमें पूरा करना है। युवाओं के लिए खेल मैदान, स्टेडियम, लाइब्रेरी आदि ऐसे कई मुद्दे है, जिन्हें जनसंपर्क के दौरान जाना है और अब उन पर कार्य करुंगी। हमारे पास कार्यकर्ताओं की सक्षम टीम है, जो क्षेत्र की आवश्यकताओं को समझकर आमजन की आवाज बनेंगे। बताने और गिनाने को बहुत मुद्दे है, लेकिन मैं सिर्फ मुद्दे गिनाने की बजाय कार्य करके बताना चाहती हूं, जिसका हिसाब स्वयं जनता आपको देगी। आज राजनैतिक क्षेत्र में बहुत कम सक्रिय रहने के बावजूद जनता से मिल रहा अपार स्नेह और अपनत्व इस बात की गवाही है कि किरणजी ने क्षेत्र के विकास की जो इबारत लिखी है, जनता ने उसे दिल से स्वीकार किया है और उनके प्रति इस चुनाव में कृतज्ञता दिखाना चाहती है।

सवाल : जैसा कि किरणजी केबिनेट मंत्री बनने के बावजूद हर गांव-ढाणी के कार्यकर्ता से जुड़ी रहती थी। हर कार्यक्रम में शरीक होती थी, क्या आप भी इतना समय आमजन को दे पाएंगी ?

जवाब : क्या मैं रख पाऊंगी या नहीं रख पाऊंगी, तो यह तो भविष्य का प्रश्न है। यह तो जनता आपको बताएंगी कि मैं क्या कर पाई और क्या नहीं, परन्तु मैं आपको आश्वस्त करती हूं कि मेरा राजसमंद की जनता से हमेशा जुड़ाव रहेगा। मैं अपने कार्यक्षेत्र और अपने कार्य के प्रति दृढ़ निश्चयी हूं। मैंने मेरी मां किरणजी से गीता का कर्मयोग सीखा है और मैं मां की तरह ही दृढ़ संकल्पित हूं और उन्हीं की तरह जनता से जुड़ी रहूंगी।

सवाल : नगरपरिषद राजसमंद चुनाव में कांग्रेस ने बड़े अंतर के साथ जीत दर्ज की, भाजपा में गुटबाजी के आरोप लगे। इस विधानसभा चुनाव में किस प्रकार भाजपा एक हो पाएगी ?

जवाब : मैं बताना चाहूंगी कि राजसमंद में कांग्रेस की कोई बड़ी जीत नहीं है, सिर्फ 2 हजार का अंतर रहा है। वह अंतर भी सिर्फ इसलिए आया, क्योंकि किरणजी के जाने के बाद राजसमंद की भाजपा के नेतृत्व में एक वेक्यूम आया। भाजपा एक ऐसा संगठन है, जिसमें हर कार्यकर्ता अपने संगठन के लिए नि:स्वार्थ भाव से कार्य करता हूं और उनका एक ही उद्देश्य रहता है कि भाजपा को जीताना है। भाजपा विश्व का सबसे बड़ा संगठन है। जब बड़ा संगठन हो जाता है, तो कई योग्य लोग उसमें जुड़ जाते हैं। पार्टी का हर कार्यकर्ता योग्य है और संगठित है। निश्चित रूप से भाजपा इस चुनाव में ऐतिहासिक अंतर से विजयी होगी।

सवाल : आप युवा है और महिला है, तो युवाओं व महिलाओं की आपसे अपेक्षाएं काफी बढ़ जाती है। आप इनके लिए क्या करना चाहेंगी ?

जवाब : मैं राजसमंद जो अधूरे कार्य रह गए हैं, उसे पूरा करुंगी। खासकर महिलाओं को सशक्त व आत्मनिर्भर बनाने के लिए ठोस योजनाएं लेकर आएंगे। युवाओं के रोजगार के लिए राजसमंद में मिनरल इंडस्ट्रीज की अपार संभावना है, जिसे बढ़ावा देंगे। प्रयास करेंगे कि भीलवाड़ा तक पहुंची गैस पाइप लाइन से जोड़कर नई इंडस्ट्रीज लगें, ताकि क्षेत्रीय युवाओं को यहीं रोजगार मिल सकें।

सवाल : आप अपनी जीत को लेकर कितनी आश्वस्त है ?

जवाब : जीत को लेकर मैं पूर्णतया आश्वस्त हूं। क्योंकि जनता ने ढाई सालों में कांग्रेस के झूठे वादों को देख लिया है और इन वर्षों में उन्होंने कोई वादा पूरा नहीं किया है। यह चुनाव लोकप्रिय जननेत्री किरणजी को श्रद्धांजलि के चुनाव है, इसलिए राजसमंद में तो जीत निश्चित है। इसमें किसी प्रकार का संशय नहीं है और जनसंपर्क में उमड़ रही अपार भीड़ इस विश्वास पर मुहर लगा रही है।

सवाल : हमारे जयवर्द्धन न्यूज के माध्यम से आम जन को क्या संदेश देना चाहेंगे ?

जवाब : मैं आमजन को यही कहना चाहती हूं कि केवल भाजपा ही क्षेत्र का विकास कर सकती है। कांग्रेस केवल भ्रष्टाचार का विकास करती है। जिस तरह किरणजी आपके हर सुख-दु:ख में खड़ी रहती थीं, मैं यह विश्वास दिलाती हूं कि सदैव उनकी ही तरह आपके हर सुख- दु:ख में खड़ी रहूंगी और जो उनके जो विकास कार्य अधूरे रह गए हैं, उन्हें अवश्य पूरे करुंगी।

भाजपा के विकास कार्यों और कांग्रेस के वादों के बीच मुकाबला

दीप्ति माहेश्वरी- तनसुख बोहरा जनता को बता रहे विकास का विजन

प्रदेश में विधानसभा उप चुनाव में सियायी पारा चरम पर है और क्षेत्रीय मुद्दों को लेकर राजनीतिक दलों में जुबानी जंग छिड़ी हुई है। इस बीच राजसमंद विधानसभा क्षेत्र के विकास को लेकर भाजपा- कांग्रेस के नेता कई वादे कर रहे हैं, तो कई दावे करते हुए अपना इरादा भी जनता के समक्ष रख रहे हैं। यह जरूर स्थिति स्पष्ट है कि हर बार की तरह इस बार भी भाजपा व कांग्रेस के बीच मुकाबला सीधा ही है। हालांकि राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी भी इस बार पूरे दमखम के साथ मैदान में है, जिनका इरादा जीत का न होकर कहीं न कहीं अपना वजूद कायम करने का प्रयास है। इससे दोनों ही दलों के वोट में कुछ सेंध भी लग सकती है। इन सबके बीच भाजपा प्रत्याशी दीप्ति माहेश्वरी और कांग्रेस प्रत्याशी तनसुख बोहरा राजसमंद विधानसभा क्षेत्र के विकास का विजन बताकर जनता से वोट मांग रहे हैं।

प्रदेश में कांग्रेस की सरकार होने का फायदा आमजन को मिले, इसी बात को लेकर कांग्रेस द्वारा ढाई साल के लिए 1 बार तनसुख बोहरा को मौका देने और एक बार सत्तारुढ़ विधायक कार्यकाल का परखने की गुजारिश करते हुए यह भी कहा जा रहा है कि अगर ढाई साल में कांग्रेस का विधायक अगर कोई कार्य नहीं करवा पाता है, तो फिर अगले विधानसभा चुनाव में जिसे मर्जी हो, उसे वोट देने के लिए आप स्वतंत्र हो, मगर एक बार जरूर कांग्रेस प्रत्याशी को मौका दें। वहीं दूसरी ओर पिछले डेढ़ दशक में सांसद व विधायक रहते हुए किरण माहेश्वरी द्वारा करवाए गए विकास कार्यो और अधूरे रह गए सपनों को पूरा करने का दावा करते हुए दीप्ति माहेश्वरी के समर्थन में भाजपा द्वारा वोट मांगे जा रहे हैं, जिसमें दिवंगत विधायक किरण माहेश्वरी के प्रति संवेदना का फायदा भी भाजपा को मिल सकता है। क्योंकि किरण माहेश्वरी का आमजन से सीधा जुड़ाव था और खास तौर महिलाओं में उनकी अच्छी पकड़ थी, जिसका तोड़ कांग्रेस निकालने का प्रयास कर रही है।

राजनीतिक दलों व प्रत्याशियों के जनसंपर्क अभियान के तहत तूफानी दौरे चल रहे हैं, मगर अब 17 अप्रैल को मतदाता ही वोट देकर तय करेंगे कि विधायक कौन बनेगा। इस बार जीत की आस न रखने वाले आरएलपी भी वोट का गणित बिगाड़ सकती है।

प्रदेश की राजनीति में राजसमंद की चर्चा

मार्बल उत्पादन के लिए देश- दुनिया में विख्यात राजसमंद इन दिनों उप चुनाव को लेकर देश व प्रदेश के राजनीतिक गलियारे में काफी चर्चित है। अब तक राजसमंद में भाजपा की कद्दावर नेता किरण माहेश्वरी की जनता के बीच मजबूत पकड़ के कारण दबदबा रहा है। यही वजह है कि पिछले कई चुनावों में कांग्रेस द्वारा एड़ी से चोटी का जोर लगाने के बावजूद ये सीट भाजपा से नहीं छीन पाए। नाथद्वारा विधायक एवं कांग्रेस के कद्दावर नेता डॉ. सीपी जोशी राजसमंद जिले के होने के बाजवूद जिला मुख्यालय के लिए कोई बड़ी छाप नहीं छोड़ पाए। वहीं, भाजपा अपने प्रचार के दौरान जिला मुख्यालय के कई दफ्तर व सुविधाएं नाथद्वारा स्थानान्तरित कर क्षेत्रवाद की राजनीति करने का आरोप भी लगाती रही है। कुछ यह भी कारण है कि कांग्रेस राजसमंद के मतदाताओं को अपनी ओर आकर्षित नहीं कर पाई और किरण माहेश्वरी लगातार तीसरी बार विधायक चुनीं गई।

किरण माहेश्वरी के निधन के बाद उनकी बेटी दीप्ति को टिकट देकर भाजपा सहानुभूति की लहर को वोट के रूप में प्राप्त करना चाह रही है, वहीं वरिष्ठ नेताओं को दरकिनार कर लम्बे समय से समाजसेवा व भामाशाह के रूप में काम करने वाले तनसुख बोहरा को टिकट देकर कांग्रेस द्वारा जनता को लुभाने का प्रयास किया जा रहा है। खास बात यह है कि किरण की ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं से काफी अच्छी पकड़ी थी, जो कांग्रेस प्रत्याशी के लिए बड़ी चुनौतीपूर्ण है। हालांकि कांग्रेस ने महिलाओं का मूड़ बदलने के लिए इस बार कई महिला नेत्रीयों को जनसंपर्क अभियान में उतारा है, जिसमें नगरपरिषद पूर्व सभापति आशा पालीवाल, कांग्रेस महिला जिलाध्यक्ष प्रेमदेवी जाट सहित प्रदेश की कई महिला नेताएं भी यहां सक्रिय है।

एक तरफ किरण माहेश्वरी द्वारा पिछले वर्षों में हर गांव-ढाणी तक करवाए गए सड़क, पेयजल, सामुदायिक भवन सरीखे विकास कार्यो के दम पर भाजपा वोट मांग रही है, वहीं कांग्रेस बड़े नेताओं से करवाई गई घोषणाओं को साकार करने के ख्वाब दिखाकर वोट बटारने का प्रयास कर रहे हैं। अब यह तो समय ही बताएगा कि किरण की संवेदना का फायदा भाजपा को मिलेगा अथवा प्रदेश में सत्तारुढ़ गहलोत सरकार से कांग्रेस कड़ी जोड़ पाएगी। क्योंकि एक तरह से दोनों ही प्रत्याशी नए हैं, जो एक सत्तारुढ़ सरकार के दम पर विकास के वादे कर रहे हैं, तो दूसरे दिवंगत किरण माहेश्वरी के विजन को आगे बढ़ाने की बात कर रहे हैं।

दोनों ही प्रत्याशी जैन समाज से

खास बात यह है कि भाजपा व कांग्रेस दोनों ही प्रत्याशी जैन समाज से आते हैं। कांग्रेस के तनसुख बोहरा जैन है, वहीं भाजपा की दीप्ति माहेश्वरी का ससुराल जैन समाज में होने से जैन समाज के वोटर भी बंट सकते हैं।

जनबल व धनबल का रहेगा प्रभाव

इस चुनाव में भाजपा प्रत्याशी दीप्ति माहेश्वरी अपनी मां के प्रति जन आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए चुनावी मैदान में है, वहीं पूंजीपति तनसुख बोहरा को टिकट देने के कारण इस चुनाव में जनभावना व धन का खासा प्रभाव रह सकता है।

चुनावी कमान किसके पास

कांग्रेस में चुनाव व्यवस्थाओं का जिम्मेदार प्रदेश सचिव पुष्पेंद्र भारद्वाज संभाल हुए हैं, तो पिछले तीन दिन से राष्ट्रीय महासचिव अजय माकन भी राजसमंद में डटे हुए हैं।

भाजपा में चुनाव व्यवस्थाओं की कमान विधायक मदन दिलावर के हाथ है, जबकि सांसद दीया कुमारी के साथ पूर्व मंत्री वासुदेव देवनानी, मावली विधायक धर्मनारायण पुरोहित डटे हुए हैं।

कहां कौन मजबूत और कमजोर

ऐसा माना जा रहा है कि कांग्रेस की केलवा क्षेत्र में अच्छी पकड़ और राजसमंद शहर से उत्तर पश्चिम क्षेत्र में मजबूत है, जबकि भाजपा शहर के साथ कुरज- कुंवारिया, गिलूंड तक मजबूत बताई जा रही है। भाजपा प्रत्याशी दीप्ति माहेश्वरी पिछले पांच माह से लगातार गांवों में जनसंपर्क कर रही है, जबकि कांग्रेस प्रत्याशी तनसुख बोहरा टिकट मिलने के बाद अभी कुछ दिनों से ही सक्रिय हुए हैं। राजसमंद शहर में नगरपरिषद का बोर्ड बनने से कांग्रेस को मजबूती मिली है, जबकि भाजपा में अनेक दावेदारों की दावेदारी होने के बावजूद सभी दावेदार अभी एक मंच पर देखे जा रहे हैं।

ये काम गिनाकर मांग रहे वोट

- कांग्रेस द्वारा बाघेरी बांध के साथ दो फोरलेन का निर्माण और डॉ. सीपी जोशी द्वारा कराए गए अन्य विकास कार्य गिनाए जा रहे हैं
- भाजपा द्वारा राजसमंद में हुए विकास कार्य, सब्जी मंडी, नई सड़कें, शहीद स्मारक, राणाराजसिंह पैनोरमा, अन्नापूर्णा माता मंदिर जीर्णोद्धार और गांवों में पेयजल की परियोजनाएं

ये है जनता की बड़ी मांगे

- राजसमंद झील हमेशा भरी रहें, इसके लिए देवास या माही जल परियोजनाओं से पानी लाना
- मावली से ब्यावर तक ब्रॉडगेज लाइन की मांग
- राजसमंद तक गैस पाइप लाइन
- नई इंडस्ट्रीज की स्थापना कर स्थानीय लोगों को रोजगार दिलाना
- राजसमंद में मेडिकल कॉलेज खोलना
- पर्यटन स्थलों का विकास कर पर्यटकों को बढ़ावा देना
- स्थानीय युवाओं को स्वरोजगार व रोजगार उपलब्ध करवाना
- खेल स्टेडियम व राजसमंद झील रिंग रोड का निर्माण

तीखी मिर्ची

विजय शर्मा
94142-39648

इसका भारी वोटों से जीतना तय

राजस्थान में 3 सीटों पर अभी उप चुनाव हो रहे हैं। उप चुनाव में देखरेख का जिम्मा यूं तो निर्वाचन आयोग का है, जिसके तहत आचार संहिता का पूर्ण पालन करते हुए चुनाव होना तय है। मगर इस चुनाव में जनसंपर्क को प्रचार पर अपनी पैनी नजर रखने वाला एक जीव है, जो प्रचार के दौरान प्रत्याशी व आमजन के साथ अनवरत बना हुआ है। बड़े- बड़े प्रत्याशियों को खबर भी नहीं है और यह बड़े प्रभावशाली ढंग से इस चुनाव को अपने पक्ष में कर रहा है। यह इतनी चतुराई से काम करता है, जिसकी किसी को कानों कान खबर भी नहीं पड़ती है। इसकी एक और खास बात यह है कि यह खुद अपना प्रचार नहीं कर रहा है, फिर भी लोग इसके पक्ष में आते जा रहे हैं। यह खुद अपनी सभा का आयोजन नहीं कर रहा, मगर सभी पार्टी के प्रत्याशियों की सभा में बिन बुला, मेहमान की तरह घुसकर अपना प्रचार कर रहा है। बड़े- बड़े राजनीति के धुरंधर भी इसे और इसके करतूत को पकड़ नहीं पा रहे हैं। इसका प्रचार का तरीका इतना प्रभावशाली है कि एक आदमी को वो पकड़ कर समझाता है, तो वो आदमी दस- दस लोगों को इसके पक्ष में ला रहा है। अभी कांग्रेस और बीजेपी दोनों बड़ी पार्टियों को भी इसकी ताकत का अंदाजा नहीं लगा है। आप मानो या न मानों मुझे तो यह चुनाव पूरा उसी के पक्ष में जाता दिख रहा है।

आपको अब उसको जानने की उत्सुकता बड़ी गई होगी कि ऐसा कौन हैं, जो चुनाव को इतना प्रभावित कर रहा है। तो आपको मैं बता ही देता हूं कि वो जीव कोरोना है, जो बड़ी ताकत के साथ इन चुनावी सभाओं में लोगों को प्रभावित कर रहा है। इन सभाओं में आप देखेंगे, तो इक्के दुक्के को छोड़कर कोई मास्क लगाने की जहमत नहीं उठा रहा है।

आश्चर्य तो तब होता है कि ये चुनाव उन विधायकों की मृत्यु के बाद उत्पन्न हुए, जिनकी जान इस कोरोना ने ले ली। सच तो यह हैं कि राजसमन्द की दिवंगत विधायक ने इस कोरोना महामारी के दौरान गांव हो शहर अभावग्रस्त लोगों की मदद के दौरान सदैव मास्क लगाकर आमजन को भी सचेत करने का कार्य किया। फिर भी कोरोना ने उन्हें नहीं छोड़ा। राजस्थान सरकार द्वारा शादी में 100 से अधिक लोगों को बुलाने पर पाबंदी है, मगर शायद चुनावी सभाओं में लोगों की गिनती करने पर पाबंदी है। यह चुनाव कोई भी पार्टी जीते या हारे, मगर कोरोना जरूर इस चुनाव में बड़ी संख्या से जीत में रहेगा।

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

अपने विवेक के साथ अवश्य मतदान करें

राजसमंद में विधानसभा उप चुनाव होने जा रहे हैं। यह हमारे देश का सौभाग्य है और भारत की लोकतान्त्रिक प्रणाली की विश्वसनीयता है कि हमारा लोकतंत्र अभी तक निरंतर मजबूती के साथ आगे बढ़ता जा रहा है। भारत के पड़ौसी देशों में लोकतन्त्र अपना वाजिब स्वरूप ही खो चुका है।

अधिकतम मतदाता अपने मत को स्वविवेक से उपयुक्त उम्मीदवार को दें, तभी लोकतन्त्र का सही स्वरूप देखने को आता है। शत प्रतिशत मतदाता मतदान करने हेतु उपस्थिती देंगे, अभी यह दूर की कौड़ी ही अनुभव होती है। इसके पीछे कई कारण है। जैसे- मतदान के महत्त्व को न जानना, वोट के प्रति उदासीनता व नकारात्मक वातावरण। कम मतदान के लिए जिम्मेदार हम सभी हैं। हम सबको मिलकर सकारात्मक वातावरण के निर्माण की पहल करना जरूरी है। इससे ही मतदान के प्रति जागरूकता आएगी। एक जागरूक नागरिक को न केवल मतदान करना चाहिए अपितु मतदान कराने के लिए भी पहल करनी चाहिए।

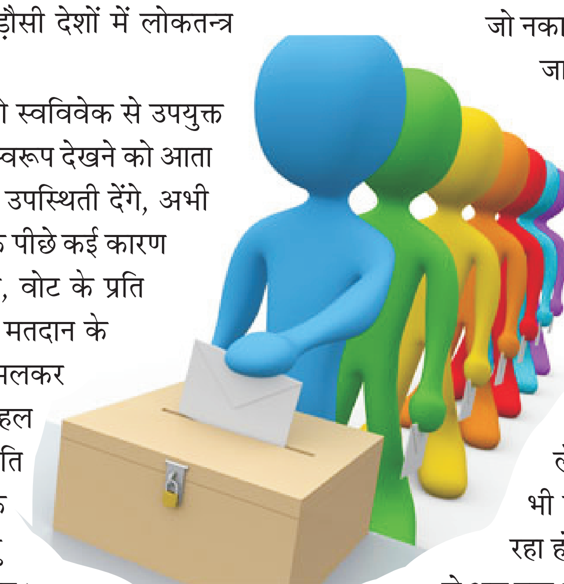

हमारे देश में चुनाव में भाग लेने वाले जन किसी न किसी दल का उम्मीदवार होता है, लेकिन निर्दलीय उम्मीदवार भी चुनाव के समय मतदाता के सम्मुख स्वयं को प्रस्तुत करता है। जीत का सेहरा उसी उम्मीदवार के बंधता है, जो प्रभावी तरीके से मतदाता को अपने पक्ष में कर सकता है। हां, यह बात अच्छे से जान लेनी चाहिए कि हर निर्दलीय उम्मीदवार नहीं जीतता और सब के सब नहीं हार जाते। जिस दल का बोलबाला या लहर है, उसके उम्मीदवारों को जीत सहजता से मिल जाती है, लेकिन लहर में भी कई योग्य उम्मीदवार अपने प्रभावी व्यक्तित्व से एवं प्रबंधन से जीत को गले लगा ही देते हैं।

जीत कौन नहीं चाहता? उसके लिए मतदाता के सम्मुख करिश्माई प्रदर्शन, उत्तेजित कर देने वाले भाषण और वक्तव्य सुनाए जाते हैं। स्टार प्रचारक आते हैं और विपक्षी की बखियों को उधेड़ा जाता है। शोर-शराबा, भीड़, उत्तेजना, चमत्कृत करा देने वाली प्रवृत्तियां आदि सब मतदाता को विमोहित करने लग जाते हैं। इसी चमत्कार के मध्य कहीं मतदाता खोता चला जाता है, जिससे वह अपनी रोज़मर्रा की जरूरतों को भुलाकर भीड़ का हिस्सा बनता चला जाता है। भीड़ के प्रवाह में वह अपने विवेक को सुला देता है और भीड़ के वेग में अपना मतदान कर आता है।

आज जरूरत इस बात की है कि मतदाता अपने विवेक से मतदान का उपयोग कर सकें। उसे करना भी चाहिए। नोटा को लेकर जो नकारात्मक वातावरण कतिपय लोगों द्वारा बनाया जा रहा है, उसे भी रोकना चाहिए। मतदाता द्वारा नोटा को अनिर्णय की स्थिति में प्रयोग में लिया जाना चाहिए, न कि चुनाव के प्रति उदासीनता दिखाने के लिए। ईवीएम द्वारा मतदान एक विश्वसनीय प्रक्रिया है। लंबे समय तक चुनाव के प्रशिक्षणों से जुड़े रहने से मैं अपने अनुभव से यह कह सकता हूं कि इसके द्वारा पूर्ण गोपनीय और विश्वसनीय चुनावी प्रक्रिया सम्पन्न होती है। लेकिन पूर्व में इस पर भी संदेह किया गया, जो भी मतदाता को भ्रमित करने का ही एक प्रयास रहा होगा। यदि ऐसा नहीं होता तो ईवीएम चुनावों से अब तक अपनी भूमिका खो चुकी होती।

सोशल मीडिया के अधिकतम प्रयोग के कारण वाजिब और गैरवाजिब सूचनाएं मतदाताओं के पास पहुंचाई जाती हैं। हमें झूठी खबरों और अफवाहों से सजग रहना चाहिए। ये ही मतदाता को भ्रमित करने के मुख्य स्रोत होते हैं। मतदान बहुमूल्य है। इससे ही राज्य और देश की योजनाएं निर्धारित होती हैं। हमारे इंफ्रास्ट्रक्चर से लेकर अंतर्राष्ट्रीय मंच पर हमारे देश के सरोकार तय होकर स्थान निश्चित होता है। आज भी हम अभाव से रूबरू हो ही रहे हैं। क्योंकि मतदाता उदासीन है और भ्रम का शिकार हो रहा है। अस्तु, सकारात्मक वातावरण के साथ वाजिब मतदान सविवेक सम्पन्न होना चाहिए। सही और जनता के सहज जीवन के पक्षधरों को आगे बढ़ाना चाहिए।

त्रिलोकी मोहन पुरोहित
वरिष्ठ साहित्यकार
कांकरोली, राजसमंद

मधु बहनजी

सुबह सुबह ग्रामीण अपनी दैनिक कार्य में व्यस्त थे। कुछ महिलाएं अपने गाय का दूध लेकर आ रही थी, तो कोई पानी भर रही थी। कुछ लोग सामुदायिक भवन में अलाव पर हाथ सेक रहे थे। तभी चौराहे पर एक बड़ी गाड़ी तेज गति से आकर रुकी। डर के मारे कुछ गाये इधर-उधर दौड़ने लगी, तो बकरियां सड़क से कूद कर चबूतरे पर चढ़ गई। गांव के हुक्मीचंद को यह देखकर गुस्सा आ गया। गाड़ी रुकते ही ड्राइवर से बोला तुझे दिखता नहीं, सिर पर चढ़े आ रहे हो, थोडा धीरे नहीं चला सकते? तभी गाड़ी में से निकले नाटे कद के आदमी, जिसने सफेद कुर्ता पजामा पहना हुआ था और गले में दुपट्टा बांध रखा था। बड़ी नम्रता के साथ बोला- 'काका जी माफ कीजिए, गलती हो गई। यह नई नई सड़क जो बनी है, जिससे गाड़ी की गति थोड़ी तेज हो गई।' पनघट योजना के तहत जो नई टंकी बनी थी, उससे पानी भर रही महिलाएं खुसर फुसर करने लगी 'कोई पार्टी का नेता दिखता हैं।' तभी गांव का मोहन चकरी नहा धोकर दौड़ते हुए आया। मोहन चक्कर देने में बड़ा माहिर है। इसलिए इसे सब मोहन चकरी के नाम से ही जानते हैं। आते ही नेताजी से मिला और उन्हें चौराहे पर बने सामुदायिक भवन में बिठाया। फिर गांव वालों को बुलाकर लाया। कई गांव वाले ठंड के मारे अलाव के पास आकर बैठ गए। कुछ महिलाएं भी धीरे- धीरे बाहर आने लगी। अब मोहनलाल ने अपनी बात कहना प्रारंभ किया। यह हमारे करमचंद जी हैं, जो हमारे क्षेत्र के विधायक प्रत्याशी हैं। इनको लंबे समय बाद यह जनसेवा का मौका मिला है। आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि करमचंद जी हमारी ही जाति के हैं। हमारे सभी मतदाताओं से निवेदन है कि हमारी जाति के एक भाई को वोट देकर विजयी बनावे। अब करमचन्द जी दो शब्द कहेंगे, यह कहकर मोहन बैठ गया।

अब नेताजी बोले- भाइयों मैं आपका ही भाई हूं, काफी साल से जनसेवा कर रहा हूं। अब मैं आपके क्षेत्र में विधायक का दावेदार बना हूं, मैं आपके गांव के कई काम पूरे करवाऊंगा। मुझ पर भरोसा करें। हमारी जाति को आगे बढ़ाना है, हमारी जाति को नौकरी में आगे लाना है। इस बार पूरी जाति वाले मुझे ही वोट देकर विजयी बनावे।

जब भाषण देकर नेताजी बैठ गए, तो गांव वाले आपस में बातचीत करने लगे हैं। कुछ लोग एक दूसरे को बता रहे थे कि ये करम चंदजी जमीनों का धंधा करते हैं, खूब पैसे वाले हैं, मगर अपनी जाति के किसी गरीब की मदद नहीं करते हैं, सभी आपस में बात रहे थे।

अब गांव के मुखिया शंभूलालजी बोले- भैया हम आपको वोट क्यों दे, आपने क्या काम किया है हमारे लिए? आज आप नेता बन गए। इससे पहले आपने जनता के लिए या अपने समाज के लिए भी क्या किया? आप सक्षम हैं, क्या आपने हमारे समाज के गरीबों के लिए कभी कोई सामूहिक विवाह आयोजित करवाया? क्या हमारे समाज के भवन के लिए चन्दा दिया? नहीं। आपने समाज के लिए भी कुछ नहीं किया। फिर आपको क्यों जीतावे?

तभी गांव की मधु बहनजी आई, जो सेवानिवृत अध्यापिका है। आते ही बोली 'क्यों भाई मोहन तू इन नेताजी की बड़ी पैरवी कर रहा है। तू बता तेरी बात हम क्यों माने, तूने गांव के लिए क्या किया, तूने तो चंदा नहीं देना पड़े, इसलिए गांव के सामुदायिक भवन का भी विरोध किया था। वह तो धन्यवाद उन विधायक महोदय का जिन्होंने गांव के चौराहे पर हमारे लिए यह बड़ा सा सामुदायिक भवन बनाया। जिस पर बैठकर हम सभा कर रहे हैं। गांव के लोग जब प्यासे मर रहे थे, तब उन्होंने ही प्रयास करके यह ट्यूबवेल खुदवाया, टंकी बनवाई, जहां पूरे गांव के सभी लोग पानी भर रहे हैं। इस गांव तक कोई आना पसन्द नहीं करता था, इतनी पथरीली सड़क थी। तब उन्हीं विधायक ने सड़क बनवाई। तुम कब तक जातिवाद के नाम पर वोट मांगते रहोगे? हमें कोई शादी ब्याह थोड़े ही करना है, हमें विकास का काम चाहिए, जो गांव के विकास के काम करेगा, हम उन्हीं को वोट करेंगे। यह सुनकर नेताजी के ड्राइवर ने गाड़ी घुमा दी। नेताजी चुपके से उस गाड़ी में बैठ गए। मोहन चकरी कुछ नेताजी को कहना चाह रहा था, मगर अनसुना कर नेताजी रवाना हो गए।

अब कई लोग मोहन को कहने लगे थे कि हमारे गांव में जिस विधायक में काम किया है, हम उसी विकासशील विधायक को वोट देंगे। मोहन बोला- कोई बात नहीं भैया, उन्हीं को वोट देना और मैं भी उन्हें ही दूंगा। मुझे तो ये नेताजी कल शहर में मिले थे, तो कहा था कि आपके गांव में कल आऊंगा, थोड़े लोगों को इकट्ठा करना, तो तुझे कुछ इनाम भी दूंगा। सभी ने मिलकर बिचारे को भगा दिया। तभी एक ने कहा मोहन चकरी की तो कमाई जाती रही। इतना सुनकर सब लोग हंसने लगे।

मांगीलाल शर्मा
राजसमंद

तेजस्वी कम्प्यूटर
www.rkcl.in
राजस्थान सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त
RS-CIT
CSC ACADEMY Computer Course
सरकारी नौकरी के लिए आवश्यक कम्प्यूटर कोर्स
Rajasthan Knowledge Corporation Limited
RS-CIT लाखों लोगों का आजमाया हुआ एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स
एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स
बस स्टैंड रोड़, कुंवारिया, जिला-राजसमंद मो. 9950084705, 9672994705, 9672980901

भाजपा ने बदली राजसमंद की तस्वीर

राजसमंद विधानसभा क्षेत्र में आज तक शहर हो या ग्रामीण क्षेत्र में ज्यादातर विकास कार्य भाजपा विधायक के कार्यकाल में हुए हैं। भाजपा के पिछले चार कार्यकाल को देखा जाए, तो दिवंगत विधायक श्रीमती किरणजी माहेश्वरी व सांसद श्री हरिओमसिंहजी राठौड़ के प्रयासों से हुए विकास कार्यों से पूरे राजसमंद विधानसभा क्षेत्र की तस्वीर ही बदल गई है। खारी फीडर काफी क्षतिग्रस्त हो चुकी थी, जिससे बड़ी तादाद में पानी व्यर्थ बह जाता था। इसलिए आठ करोड़ की लागत से नहर का सुदृढ़ीकरण किया, जिससे राजसमंद झील में पानी की आवक बढ़ी, जिससे वर्ष 2017 में करीब चार दशक बाद झील छलकी। साथ ही क्षेत्रीय किसानों को झील से सिंचाई का पानी भी पिछले वर्षों के मुकाबले काफी ज्यादा मिला, जिससे खेती की उपज बढ़ने से किसान भाई आर्थिक रूप से मजबूत हुए।

बंशीलाल खटीक
पूर्व विधायक राजसमंद

शहर के विकास का श्रेय भाजपा को

मैं जन्म से राजसमंद को देख रहा हूं। यहां पर गांव स्तर की गलियां, तंग सब्जी मंडी, छोटा सा बस स्टैंड हुआ करता था और सिर्फ एक सड़क का शहर कहा जाता था। कहने को 1991 से राजसमंद जिला बन गया था, मगर सुविधाएं एक कस्बे के स्तर की ही थी। कई नेता बने, कई विधायक और मंत्री भी बने, मगर शहर में कोई बदलाव नहीं हुआ। गत एक डेढ़ दशक से राजसमंद शहर का कायाकल्प हुआ है, जिसमें आधुनिक सब्जीमंडी, बस स्टॉप, चारों तरफ चौड़ी सड़कें, सर्वसुविधायुक्त अस्पताल, प्रमुख चौराहों का सौन्दर्यीकरण, अन्नपूर्णा माता मंदिर तक सड़क निर्माण, राजसिंह पैनोरमा, अमर जवान ज्योति स्मारक आदि ऐतिहासिक कार्य हुए हैं। मेरे शहर के लिए जिसने कार्य किया है और जो विकास का कार्य करेगा, मैं उसी को वोट के साथ समर्थन दूंगा। जनप्रतिनिध यानि विधायक ऐसा होना चाहिए, जो आम व्यक्ति की बात सुनें और जनहित के कार्य करें।

रोड़ीलाल सनाढ्य
सेवानिवृत अध्यापक, कांकरोली

जो विकास की बात करेगा, वही दिलों पर राज करेगा

प्रधानमंत्री के सबका साथ, सबका विकास का उद्घोष के अनुसार जिले में कई विकास के कार्य अपेक्षित है। राजसमंद उप चुनाव के बद चुने जो वाले विधायक से राजसमंद झील संरक्षण एवं संवर्द्धन, श्री द्वारकाधीश मंदिर तक जाने का वैकल्पिक मार्ग, नाथद्वारा से मारवाड़ तक ब्रॉडगेज लाइन, कृषि महाविद्यालय, जिला मुख्यालय पर श्री वल्लभाचार्य विश्वविद्यालय, औद्योगिक विकास के माध्यम से रोजगार सृजन की प्रमुख मांग है। अब हमारे जनप्रतिनिधियों को दलगत राजनीति से ऊपर उठकर राजसमंद के समग्र विकास की सोच रखनी होगी, तभी उनके जनप्रतिनिधि बनने की सार्थकता है। जिनके चुने जाने के बाद भी जाति, धर्म, समुदाय व राजनीतिक दल आड़े नहीं आए और जिनका मकसद सिर्फ समग्र विकास और जन समस्या सुनना रहे, वहीं राजसमंद में राज करेगा। अब जनता उसे ही चुनेगी, जो समग्र विकास की सोच, समझ व दक्षता रखता हो।

भगवत शर्मा
संस्थापक अध्यक्ष
राष्ट्रीय जन चेतना मंच राजसमंद
मो. 94608-02931

शक्ति एडवरटाईजिंग
&
शक्ति स्पोर्ट्स
सभी अखबारों में विज्ञापन हेतु सम्पर्क करें।
शास्त्री मार्केट, कांकरोली (राजसमंद) Mob. 9414239648, 9414473275, Ph. 02952-225137

राजसमंद जिले की खबरों से अपडेट रहने के लिए सब्सक्राइब करें
YouTube Channel
Jaivardhan News

एक नेता की व्यथा

एक दिन एक नेता ने अपनी पत्नी से कहा– जानती हो मैं नेता से राजनेता खड़गसिंह क्यों नहीं बन पाया। क्योंकि तुम कोई फूलनदेवी बन कर नहीं आई मेरे घर पर। चोर डाकुओं के इलाके से तुम जरूर आईं हो। राजनीति के माहौल में तो पत्नी नहीं हो। अब तक जो हुआ सो हुआ। अब आगे के लिए कुछ सोचा है। मुझे तो नेता से राजनेता बनकर देश व समाजसेवा के प्रति अपना दायित्व निभाना चाहिए। नेता की पत्नी बोली– साफ–साफ क्यों नहीं कहते आपको शराब पीने का एक बहाना चाहिए। नेता बोला, हमारे भारत में इतने बड़े बड़े राजनेता है।

तुम क्या समझती हो कि सारे के सारे नेता शराबी है, शराब पीते है? पत्नी बोली– सबका तो मुझे पता नहीं, लेकिन 80 प्रतिशत नेता पीकर ही जीते है। अरे शराब पीकर राजनेता बनकर मरने से क्या फायदा? मरना ही चाहते हो तो मुझ पर मरो, आजकल के नेता दूसरो की पत्नियों पर भी तो मर जाते हैं। तुम अपनी सगी पत्नी पर नहीं मर सकते। सच तो यह है कि तुम अब नहीं सुधर सकते।

नेता बोला– शादी के पहले मैं पिताजी के और शादी के बाद तुम्हारे पदचिह्नों पर तो चल रहा हूं। मेरा विश्वास करो कि मैं अब अपने आपको बदल रहा हूं।

पत्नी ने कहा– मेरे पिताजी ने सन् 1984 में एक नेता को मारा था, जो शक्ल से तो सीधा साधा लग रहा था, लेकिन मरने के बाद 2 लीटर शराब पाई गई थी। नेता की अंतिम इच्छा से उसके साथ शराब की 3 बोतल भी दफनाई गई थी।

नेता बोला– प्रिये मैं तो शराब से तौबा करता हूं, तुम मुझे पिटाई से कैसे बचना है, वो रास्ता बताओ।

पत्नी बोली– बिल्कुल मत डरो पिटाई से, तुम पर की गई सारी मारपीट बेकार ही जाएगी। तुम्हे जनता मारे या ना मारे, क्या जनता मुझसे ज्यादा आपको थोड़ी मार पाएगी।

नेता ने फिर पत्नी से पूछा– अगर में चुनावी सभा में किसी महिला नेत्री के साथ बैठ गया, तो तुम्हारी नींद तो नहीं उड़ जाएगी?

पत्नी ने जवाब दिया, इसकी नौबत ही नहीं आएगी। महिला नेत्री के पास आजकल बुजूर्ग नेता बैठते हैं, वो नेता मंच पर भाषण देने जाएगा, तो कोई दूसरा बुजूर्ग नेता युवा नेत्री के पास बैठ जाएगा। इस तरह तुम्हारा महिला नेत्री के पास बैठने का नंबर नहीं आएगा। नेता ने फिर पत्नी से कहा– तुम मुझे अब मंच पर जमने जमाने का तरीका बताओ, तो पत्नी ने कहा जो सत्ता में नहीं उनके गुण गाओ, सत्ता वाले को खरी खोटी सुनाओ। चुनावी सभा में बोलने का गुर है, कई साल पुराना, हर चुनावी मौसम में इसे आजमाना।

इतनी सारी तैयारियां के बाद नेता पत्नी से ज्ञान प्राप्त कर एक चुनावी सभा के लिए रवाना हुआ। तो पास खड़े नेताजी के साले साहब फुट फुट कर रोने लगे।

नेताजी ने इसका कारण पूछा, आप क्यों अपना आपा खो रहे हो साहब? धीरज रखो साले साहब, मैं बस जल्दी ही आ जाऊंगा। साले साहब ने कहा– जीयाजी, मेरे अपने आप आंखो में आंसू निकल आ रहे हैं। मुझे लगा आप कही आत्महत्या करने जा रहे हैं। नेता ने गुस्से में कहा– कम से कम किसी बात में तो देश के नेताओ का अनुसरण करू। तुम्हारी जीजी के हाथों मरने से तो अच्छा है, राजनेता बन इस देश की जनता के हाथों मरू।

सम्पत उजाला
कवि, आमेट राजसमंद
हाल पत्रकार प्रातः काल
बोईसर, मुंबई

लोकतंत्र, चुनाव और हम लोग

होली पर्व जा चुका है, चुनाव पर्व चल रहा है। देश के पांच राज्यों में चुनाव हैं। राजस्थान में तीन स्थानों पर उप चुनाव हैं, जिनमें से राजसमंद भी एक है। इधर कोरोना महापर्व मना रहा है। वह पूरी तैयारी के साथ पुन: प्रकट हुआ है। कहते हैं दुश्मन तभी आक्रमण करता है, जब आप गाफिल हो। लोग बेखौफ़ हैं तो कोरोना भी बेकाबू है। यह जानलेवा बीमारी लापरवाही का पूरा लाभ उठा रही है। यह लापरवाही तीन स्तरों पर है। आम लोग, प्रशासन और राजनेता। लोग मास्क नहीं लगाना गर्व की बात समझते हैं। सोशल डिस्टेन्सिंग किस चिड़िया का नाम है, यह भूल चुके हैं। धार्मिक स्थलों पर, बाज़ारों में लोगों का मेला सा लगा रहता है। इधर चुनावी रैलियों और सभाओं की बहार आई हुई है। प्रशासन मूक दर्शक बना देख रहा है, राजनेता मुदित हैं, कोरोना कुपित है। कोरोना गाइडलाइन कागजी बनकर रह गई है। यही भारतीय लोकतंत्र के विरोधाभास हैं। तुलसीदास जी ने कहा है, समरथ को नहीं दोष गुसाई। अब समय आ गया है कि भीड़ एकत्रित करने की बजाय चुनाव प्रचार के लिए प्रिंट मीडिया और सोशल मीडिया का अधिक से अधिक प्रयोग किया जाए। चुनाव आयोग को भी जागना होगा।

अब्राहम लिंकन ने लोकतंत्र को यों परिभाषित किया था। जनता का, जनता के लिए, जनता द्वारा शासन, जबकि जॉर्ज बर्नार्ड शॉ कहते हैं लोकतन्त्र अपनी महंगी और समय बर्बाद करने वाली खूबियों के साथ सिर्फ भ्रमित करने का एक तरीका भर है, जिससे जनता को विश्वास दिलाया जाता है कि वह ही शासक है, जबकि वास्तविक सत्ता कुछ गिने- चुने लोगों के हाथ में ही होती है।

जॉर्ज बर्नार्ड शॉ की आलोचना में चाहे जितनी सच्चाई हो, यह निर्विवाद है कि लोकतन्त्र लोगों की पहली पसंद है। इसीलिए तो दुनियाभर के लोग इस प्रणाली को लागू करवाने के लिए अपना खून तक बहाने को तैयार रहते हैं। हमारे पड़ोसी देश म्यामार के हालात इसका ज्वलंत उदाहरण है। दरअसल लोकतन्त्र का अर्थ है ऐसी जीवन पद्धति जिसमें स्वतन्त्रता, समता और बंधुता सामाजिक जीवन के मूल सिद्धान्त होते हैं। सबसे बड़ी बात जो नागरिकों को लुभाती है, वह है अभिव्यक्ति की आज़ादी। यद्यपि कई बार लोकतन्त्र में भी असहमति के स्वरों का गला घोंटने के प्रयास दिखाई देते हैं। सत्ता के द्वारा झूठे मुकदमे बनाकर, न्यायपालिका पर दबाव डालकर या अन्य तरीकों से प्रताड़ना देकर लोगों को चुप रहने के लिए मजबूर किया जाता रहा है। परंतु यह विकासशील लोकतंत्रों में अधिक दिखाई देता है, जहां नागरिक पढ़े- लिखे और जागरूक हैं, वहां सत्ता खुलकर नहीं खेल सकती, चाहे प्रचंड बहुमत हो। भारत में यद्यपि साक्षरता दर कम है, परंतु यहां का वोटर राजनीतिक दृष्टि से परिपक्व है, यह कई बार सिद्ध हो चुका है। देश की जनता सबकुछ देखती, सुनती, गुनती एवं सहती है और मौका आने पर एक बटन से सारी तस्वीर बदल देती है।

चुनाव लोकतन्त्र तक पहुंचने का मार्ग है। लोकतन्त्र यदि साध्य है, तो चुनाव साधन। गांधीजी कहते थे कि साध्य ही नहीं साधन भी पवित्र होना जरूरी है, परंतु बड़े दुख के साथ कहना पड़ता है कि साधनों की पवित्रता उत्तरोत्तर गौण होती जा रही है। चुनाव के दौरान स्टार प्रचारक भी मुद्दों को ताक पर रख विरोधी उम्मीदवार और उसकी पार्टी के नेताओं का चरित्र हनन तक करने को उतारू हो जाते हैं। यह सच है कि सभी ऐसा नहीं करते परंतु जो ऐसा करते हैं, वह गलत है। दूसरों ने क्या किया और क्या नहीं किया के स्थान पर ज़ोर यह बताने पर हो कि हम क्या करेंगे। पहले एक पहेली पूछी जाती थी कि इस रेखा को बिना काटे- छांटे छोटी करके दिखाओ। जवाब नहीं सूझता तो गुरुजी उसके पास ही एक बड़ी रेखा खींच देते। पूर्व की रेखा स्वत: छोटी हो जाती थी। अर्थात किसी को छोटा किए बिना अपने को बड़ा करके दिखाओ। आज विपरीत हो रहा है। पास वाली रेखा को काट कूट कर छोटा किया जा रहा है, ताकि हमारी रेखा बड़ी दिखे। धर्म, जाति, संप्रदाय के आधार पर वोट मांगना भी लोकतंत्र की सेहत के लिए उचित नहीं है। इससे जनता में गलत संदेश जाता है, सामाजिक समरसता पर आंच आती है। यह हमारे

संविधान की भावनाओं के अनुकूल नहीं है। यह प्रसन्नता का विषय है कि हमारे राजसमंद के जनप्रतिनिधि सामाजिक समरसता का पूरा ध्यान रख रहे हैं, परंतु राष्ट्रीय परिदृश्य आश्वस्तकारी नहीं है। एक बुराई जो पिछले कुछ वर्षों से घर कर गई है वह है, केश फॉर वोट, ल्कोहोल फॉर पोल, इसके लिए वोटर भी कम जिम्मेदार नहीं हैं। वोटर इस बात को भूल जाता है कि वोट के बदले कुछ लेने पर उसकी आवाज़ कमजोर हो जाएगी। फिर वह जीते हुए प्रत्याशी के सम्मुख पुरजोर शब्दों में अपनी बात नहीं रख सकेगा।

एक सरपंच के पास कुछ लोग आक्रोश की मुद्रा में पहुंचे कि दो वर्ष होने को आए और तुमने हमारे ये- ये काम नहीं किए हैं। बिजली, पानी, सड़क, स्वास्थ्य केन्द्र सभी काम बाकी हैं। सरपंच कुछ देर तो हो-हल्ला सुनता रहा, फिर बोला, जाओ, नहीं करता, क्या कर लोगे ? कैसे नहीं करोगे, हमने तुम्हें वोट दिया है। इस पर सरपंच ने कहा, तुमने वोट दिया नहीं है, बल्कि मैंने 500-500 रुपए में तुम्हारा वोट खरीदा है। तुम्हें बोलने का कोई अधिकार नहीं है। यह घटना प्रतीकात्मक है, परंतु वोट के बदले कुछ चाहने वालों के लिए एक सबक है। हमें इस संबंध में तमिलनाडु के एक गांव ओथाविडू से प्रेरणा लेनी चाहिए। यह गांव मदुरई के समीप है, जिसकी तीन पीढ़ियों ने आज़ादी के बाद पहले चुनाव से लेकर अब तक किसी प्रत्याशी को गांव के अंदर प्रचार की इजाजत नहीं दी है, न तो किसी को गांव घर में झंडे, बैनर, पोस्टर आदि लगाने की अनुमति है और न ही वोटों के लिए लेन- देन के लिए कोई जगह। वहां के लोग कहते हैं कि पार्टियों के प्रचार, भाषणों आदि से आपसी मनमुटाव बढ़ता है। उनके लिए गांव की एकता और सौहार्द सबसे बड़ी प्राथमिकता है। इसीलिए जब भी कोई प्रत्याशी प्रचार के लिए आता है, तो वहां के लोग गांव की सीमा पर पहुंच जाते हैं। उसका पारंपरिक तरीके से स्वागत किया जाता है, वहीं ग्रामीण अपनी समस्याएं बताते हैं और उम्मीदवार की बात सुनते हैं। यह परंपरा तमिलनाडु के और भी कई गांवों में है।

स्वस्थ लोकतंत्र के लिए लोगों का नज़रिया भी स्वस्थ होना आवश्यक है। वोटर को चाहिए कि वह प्रलोभनों से परे रहकर योग्य प्रत्याशी का चुनाव करें। एक ऐसा प्रत्याशी जो जन समस्याओं से जुड़ा हो, जमीन से जुड़ा हो। उम्मीदवार की योग्यता, पृष्ठभूमि तथा जन समस्याओं के प्रति जागरूकता को देखकर ही मतदान का निर्णय करना चाहिए, वरना हम ही कहेंगे कि उसने तो पांच वर्ष तक वापस मुंह ही नहीं दिखाया या 'गोह रा जाया सब खरदरा ई व्हे'।

प्रत्याशी को चुनना हमारे हाथ में है, यही तो लोकतंत्र की सबसे बड़ी ताकत है। हमें इस ताकत का प्रयोग जरूर करना चाहिए। संविधान ने हमें अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता दी है, परंतु यह नहीं भूलना चाहिए कि स्वतन्त्रता का अर्थ स्वच्छंदता नहीं है। ईश्वर ने हमें दो आंखें दो कान दिए हैं, परंतु जीभ केवल एक दी है। हम खूब देखें, खूब सुनें लेकिन बोलें कम। अर्थात सोच समझकर बोलें। असहमति का आदर जरूर करें। असहमति का अर्थ शत्रुता नहीं है। लोकतंत्र की यही तो खूबी है। यहां अलग- अलग मत- मतांतर वाले लोग एक साथ रहते हैं। इसी को विविधता में एकता की संज्ञा दी गई है। इस बात को सुनिश्चित करना इस देश के कर्णधारों सहित हम सबका कर्तव्य है कि आपस में मतभेद भले ही हों, किन्तु मनभेद नहीं होने पाए। तभी लोकतंत्र कायम रह सकता है। आदर्श लोकतंत्र वही है, जहां के नागरिक अपने अधिकारों के प्रति जागरूक रहने के साथ-साथ कर्तव्य के प्रति भी सचेत रहें। प्रत्येक नागरिक को देश की एकता और अखंडता के प्रति वचनबद्ध रहना होगा। नागरिक ऐसा कुछ भी नहीं करें, जिससे आपसी भाईचारे, सामाजिक समरसता और इस देश की सदियों पुरानी गंगा- जमुनी संस्कृति पर आंच आए। प्रत्येक नागरिक को स्वयं के हितों के साथ- साथ दूसरों के हितों का भी ध्यान रखना चाहिए। उदाहरण के लिए कोरोना महामारी में लोगों के व्यवहार को देखा जा सकता है। यदि कोई बिना मास्क के निश्चिंत होकर निरुद्देश्य घूमता- फिरता है। भीड़-भाड़ में जाता है तो वह संक्रमित होकर सबसे पहले अपने ही परिवार का अहित करेगा, जिसमें मासूम बच्चे और बुजुर्ग भी रहते हैं। दरअसल कोरोना का फैलाव नाभिकीय विखंडन की तरह है। एक परमाणु जब टूटता है, तो तीन न्युट्रोन निकलते हैं। ये तीन परमाणुओं को तोड़ते हैं, जहां तीन- तीन न्युट्रोन और निकलते हैं। यह प्रक्रिया आगे से आगे चलती रहती है और पूरा पदार्थ आग के गोले में बदलकर तबाही मचा देता है। कोरोना वायरस भी किसी मोहल्ले के एक व्यक्ति से आरंभ होकर परिवार, मोहल्ले, शहर और आगे जाकर पूरे देश को चपेट में ले लेता है। अत: हमें अब भी संभल जाना चाहिए। मास्क और सोशल डिस्टेन्सिंग का पालन करें, वेक्सीन लगाएं और इसके लिए लोगों को प्ररित करें। क्यों न देश के लिए अच्छी चीजों का आरंभ हम अपने घर से ही करें। तभी तो लोकतंत्र मजबूत होगा।

माधव नागदा
कहानीकार एवं समालोचक
लालमादड़ी (नाथद्वारा) 313301
मो. 9829588494

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

लोकतंत्र रो मेळो, बोटां रो हामेळो

होळी दिवाळी ज्यूं चुणाव रो बी जबरो तेवार वीया करे हैं। यूं तो यो तेवार 5 वरसां में आवे, पण अणी पेली बी आई सके। कोई दन तै नी है। मनखा रो गणो खरो टैम तो बोट देवा मेई परो जावे। कदी दल्ली रा चुणाव, कदी जैपर रा, कदी नगर पालिका रा, कदी पंचात रा अर फेरू न्यारा-न्यारा। आंगळी री स्याई उतरवा रे पेली नवी स्याई त्यार। ये चुणाव बी व्याव ज्यूं वेवे। नराई विंद तोरण वांदवा री त्यारी करें, पण एकईस तोरण हुदी पुगे। वंच्या लगा तो असल विंद ने परणता लगा देखवा रोईस काम करें। ज्यूंई चुणाव आयोग बोट री तारीख रो ऐलाण करें। वणी दनऊं व्याव मंडी जावे ने, गणेशजी रो पाटो चढ़ी जावे। हेंग पाल्टियां पेलीऊं परणियां लगां विंद नेईस विंद वणावे। कोई क पाल्टी नवो विंद हेरीन लावे। सबां री याईस हर व्हे के कांई कीदा जीत नाम री विंदणी वणीरेइस पले बंदी जावे। काचा पोचा विंद रैली- जलूस काडीन आपणी ताकत वतावे के म्हारे जस्यो ठाबंद विंद आखा मलख में नी मलेला।

नाम तै करवा केड़े मोटा मेकमा में फारम भरवा रो लम्बर आवे। अणी दन बी मनखा रो जमावड़ो चावे। जतरो जमावड़ो, वतरो परचार, न वतरा बोट। सड़कां पे जाम नी लागे न आवा- जावा वाळा ने परेसानी नी आवे, तो फारम भरवा अरथ कांई। गाजा- वाजा, रंग- गुलाल, झंडा- जलूस, नाच- गाणा न भारत माता री जै- जैकार करतो मनखां रो मेळो मोटा हाकम हुदी पौंचे। फारम भरिया केड़े काम चालु व्हे, उम्मेद्‌वारा ने ठाणे बैठावा रो। नराई निर्दलीय उम्मेद्‌वार अणी कारणऊं फारम भरे हैं, के कोई वणाने आदर भावऊं ठाणे बैठाई देवेला।

कोई- कोई बागी उम्मेदवार टसऊ मस नी वे। नाम पासो लेवा रे दन तक कोई बी नी केई सकें के कतरा उम्मेदवार मैदान में है। उम्मेदवार तै वीया केड़े सब जणां परचार रां काम में लागी जावे। एक दन में वना गणती री रेल्यां नै सभावां रो इंतजाम सालतो रेवे। आज अठे भाषण तो काले वठे। पाल्टी रा ठावां चावां नेताजी ने बी बुलावणा पड़े। बोट रे दो- तीन दन पेली घर- घर जाईन एक-एक बोट नै भोळावा- सपळावा रो काम चालू वेवे। कणीने बोतल देणी पड़े, तो कणीन काम्बल, तो कणीन रीप्या। बोट रे दन आवा-जावा रो सादन बी करणो पड़े। बाराई मीना पगे सालवा वाळो मनख बी वणी दन नेम पग नी मांडे। गणती रे दन पासो मेळो भरावे। टीवी पे बुलेटीन न गरमा-गरमा बहसां चाले। ज्यूं ज्यूं गणती आगे बढ़े, हार-जीत री तस्बीर साफ वेती दीखें। पासे रेवा वाळो उम्मेदवार बी हार नी माने। वो केवे तेल देखो न तेल री धार देखो। जीतुला तो मुईस। हार-जीत नक्की वीया केड़े विजय जलूस काढ़े। अणी चुणाव पेल्यां घर- घर जोइन धोक देवा वाळा ने जित्यां केड़े लोग माथा पै बैठाई दें, जो पांच बरस तक मनखा रे माथे बैठ्यो रेवे अर लोग बाग वणीरे धोक देता फरे।

डॉ. गोपाल राजगोपाल
चिकित्साविद्‌ व साहित्यकार
उदयपुर, राजस्थान

जयवर्द्धन NEWS
जयवर्द्धन
कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोट्‌र्स, शास्त्री मार्केट, जेके मोड़ के पास
कांकरोली, जिला राजसमंद, 94142-39648, 96729-18138
E-mail : jaivardhanpatrika@gmail.com, Web : www.jaivardhannews.com

To